NCERT Hindi Books
Set of 5

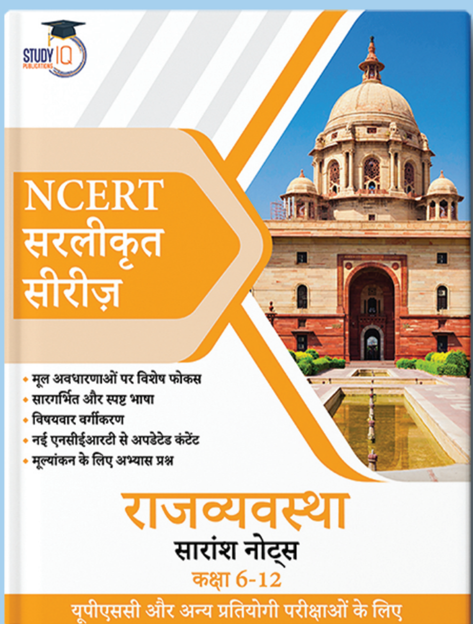

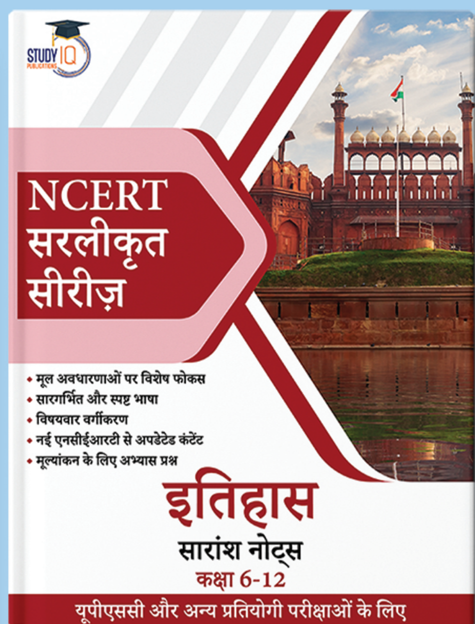

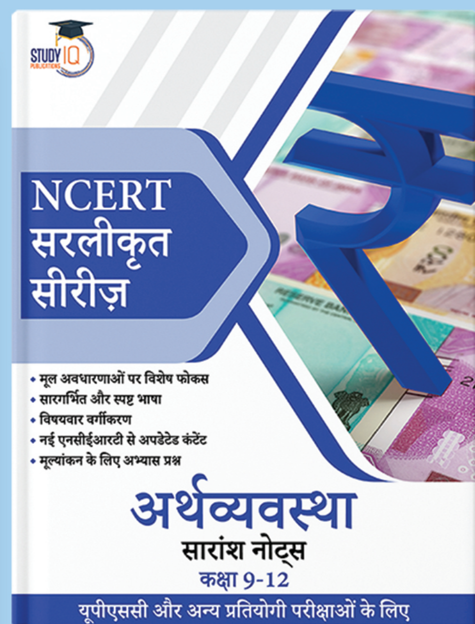

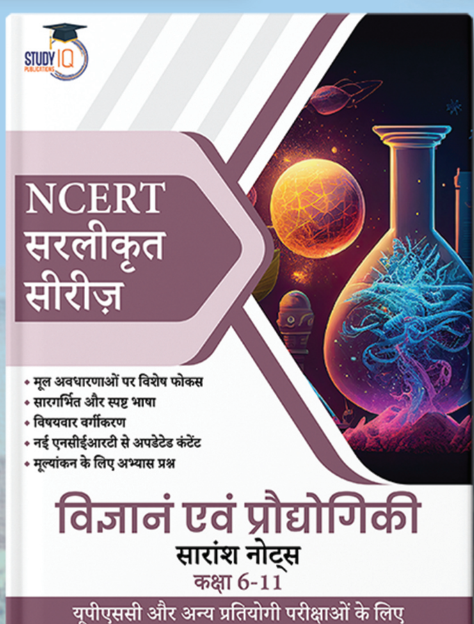

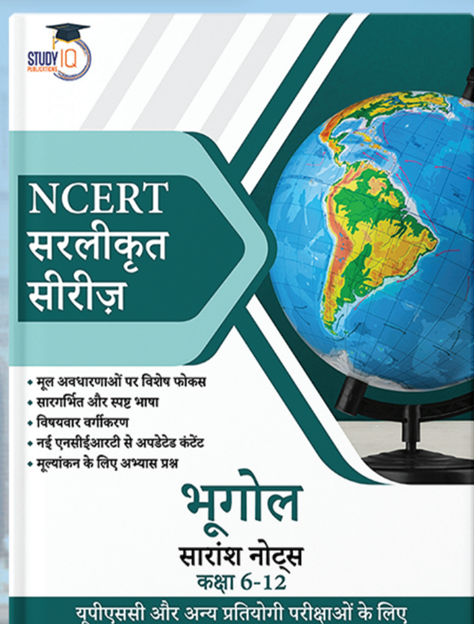

STUDY IQ
PUBLICATIONS

NCERT सरलीकृत सीरीज़

- मूल अवधारणाओं पर विशेष फोकस
- सारगर्भित और स्पष्ट भाषा
- विषयवार वर्गीकरण
- नई एनसीईआरटी से अपडेटेड कंटेंट
- मूल्यांकन के लिए अभ्यास प्रश्न

राजव्यवस्था

सारांश नोट्स

कक्षा 6-12

यूपीएससी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

"NCERT सरलीकृत (NCERT Simplified)" पुस्तक श्रृंखला में आपका स्वागत है, यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की पाठ्यपुस्तकों का संक्षिप्त और स्पष्ट अवलोकन प्रदान करने के लिए डिजाइन की गयी एक व्यापक मार्गदर्शिका है। यह पुस्तक यूपीएससी, एसएससी और अन्य सभी सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई है। StudyIQ द्वारा प्रकाशित, इस पुस्तक का उद्देश्य अत्यधिक विस्तृत एनसीईआरटी पाठ्यक्रम को सरल बनाना और आपको अपनी परीक्षा में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान से समृद्ध करना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं के क्षेत्र में, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को विभिन्न विषयों की गहन समझ के लिए एक नींव के रूप में माना जाता है। इन पुस्तकों की सुस्पष्ट पाठ्य सामग्री और सटीकता पर शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा समान रूप से भरोसा किया जाता है। हालाँकि, इसके विस्तृत पाठ्यक्रम के कारण, अभ्यर्थियों के लिए पुस्तक में दिए हुए हर विवरण को कवर करना या पढ़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, "NCERT सरलीकृत" को आपकी तैयारी को कारगर बनाने और सफलता की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए एक आदर्श सहयोगी के रूप में तैयार किया गया है।

इस पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; शुरुआत में केन्द्रीय तथ्य सार एवं सिद्धांत तथा अंत में राज्य विशेष तथ्य सार एवं सिद्धांत। परीक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- **सारगर्भित सारांश:** हमने अनावश्यक विवरणों को समाप्त करते हुए मुख्य अवधारणाओं, परिकल्पनाओं और सिद्धांतों को समाहित किया है, ताकि आप आवश्यक ज्ञान में महारत हासिल करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- **विषय-वार प्रस्तुति:** पुस्तक को अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक विशिष्ट विषय के लिए समर्पित है, जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था, समाज इत्यादि।
- **सटीक और स्पष्ट भाषा शैली:** हमारा मानना है कि सीखने की प्रक्रिया में भाषा की सटीकता और स्पष्टता महत्वपूर्ण है। इसलिए, पुस्तक की भाषा को सरल एवं सहज रखा गया है, जिससे जटिल अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। यह लेखन शैली न केवल विषय की त्वरित समीक्षा में सहायता करती है, बल्कि जानकारी के बेहतर उपयोग करने की सुविधा भी प्रदान करती है।
- **अभ्यास प्रश्न:** सारांश के साथ ही, "NCERT सरलीकृत" में आपकी समझ का आकलन करने और आपके सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए सोच-समझकर तैयार किये गये अभ्यास प्रश्न शामिल हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आपकी सफलता की यात्रा में, "एनसीईआरटी सरलीकृत" आपका विश्वसनीय सहयोगी होने का वादा करता है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक आपको अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक ज्ञान, आत्मविश्वास और कौशल के साथ सशक्त बनाएगी।

शुभकामनाओं सहित

टीम Study IQ

विषय सूची

कक्षा : 6 सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – I

1. विविधता की समझ 2

2. विविधता और भेदभाव 5

3. सरकार 9

4. पंचायती राज 12

5. ग्राम प्रशासन 14

6. नगर प्रशासन 16

7. ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका 18

8. शहरी क्षेत्र में आजीविका 21

कक्षा : 7 सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – II

1. समानता 24

2. स्वास्थ्य सेवाओं में सरकार की भूमिका 27

3. राज्य सरकार कैसे काम करती है 31

4. लड़के और लड़कियों के रूप में बड़े होना 34

5. महिलाओं ने बदली दुनिया 36

6. मीडिया को समझना 39

7. हमारे आसपास के बाजार 42

8. बाजार में एक शर्ट 44

कक्षा : 8 सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – III

1. भारतीय संविधान 47

2. धर्मनिरपेक्षता की समझ 52

3. संसद तथा कानूनों का निर्माण 55

4. न्यायपालिका 59

5. हाशियाकरण की समझ 64

6. हाशियाकरण से निपटना 68

7. जनसुविधाएं 72

8. कानून और सामाजिक न्याय 75

कक्षा : 9 लोकतांत्रिक राजनीति – I

1. लोकतंत्र क्या है? लोकतंत्र क्यों जरूरी है? 80
2. संविधान निर्माण 84
3. चुनावी राजनीति 91
4. संस्थाओं का कामकाज 100
5. लोकतांत्रिक अधिकार 108

कक्षा : 10 लोकतांत्रिक राजनीति – II

1. सत्ता की साझेदारी 116
2. संघवाद 120
3. जाति, धर्म और लैंगिक मुद्दे 126
4. राजनीतिक दल 134
5. लोकतंत्र के परिणाम 140

कक्षा : 11 (भाग–1) भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार

1. संविधान: क्यों और कैसे? 146
2. भारतीय संविधान में अधिकार 153
3. चुनाव और प्रतिनिधित्व 163
4. कार्यपालिका 171
5. विधायिका 179
6. न्यायपालिका 189
7. संघवाद 199
8. स्थानीय सरकार 207
9. संविधान एक जीवित दस्तावेज के रूप में 214
10. भारतीय संविधान का दर्शन 223

कक्षा : 11 (भाग–2) राजनीतिक सिद्धांत

1. राजनीतिक सिद्धांत: एक परिचय 234
2. स्वतंत्रता 237
3. समानता 243
4. सामाजिक न्याय 250
5. अधिकार 256
6. नागरिकता 262

7. राष्ट्रवाद 268

8. धर्मनिरपेक्षता 274

कक्षा : 12 (भाग–1) समकालीन विश्व राजनीति

1. द्विध्रुवीयता का अंत 282

2. सत्ता के समकालीन केंद्र 290

3. समकालीन दक्षिण एशिया 297

4. अंतर्राष्ट्रीय संगठन 306

5. समसामयिक विश्व में सुरक्षा 317

6. पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधन 325

7. वैश्वीकरण 332

कक्षा : 12 (भाग–2) स्वतंत्र भारत में राजनीति

1. राष्ट्र निर्माण की चुनौतियाँ 338

2. एक दल के प्रभुत्व का दौर 347

3. नियोजित विकास की राजनीति 355

4. भारत के विदेश संबंध 360

5. कांग्रेस प्रणाली: चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना 369

6. लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट 378

7. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ 387

8. भारतीय राजनीति: नए बदलाव 400

प्रतिदर्श पेज

- **ऐतिहासिक प्रभाव:** विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों ने कई क्षेत्रों में जीवन व संस्कृतियों को आकार दिया और उनकी विविधता में योगदान दिया।

भौगोलिक अनुकूलन

- **भूगोल की समृद्धि:** विविधता तब उत्पन्न होती है जब लोग अपनी जीवन शैली को अपने भौगोलिक परिवेश के अनुकूल बनाते हैं। समुद्र के पास रहना पहाड़ी क्षेत्रों में रहने से अलग है जो कपड़ों, खाने की आदतों और काम के प्रकारों को प्रभावित करता है।
- **शहरी जीवन:** शहरों में लोगों का जीवन उनके भौतिक परिवेश से अलग लग सकता है क्योंकि वे अपनी उपज खुद उगाने के बजाय भोजन और वस्तुओं के लिए बाजारों पर निर्भर रहते हैं।

केरल और लद्दाख में विविधता

- **लद्दाख व जम्मू एवं कश्मीर** के पहाड़ों में एक मरुस्थली क्षेत्र है जिसमें वर्ष के अधिकांश अवधि में बर्फ के आवरण और वर्षा की कमी के कारण सीमित कृषि होती है।
  - लोग पानी पीने के लिए और विशेष रूप से मूल्यवान पश्मीना ऊन के लिए भेड़ व बकरियों को पालने के लिए पिघलती बर्फ पर निर्भर हैं।
  - लद्दाख एक व्यापार मार्ग के रूप में कार्य करता है और इसमें लोक गीतों व कविताओं की समृद्ध परंपरा के साथ तिब्बत एवं इस्लाम का सांस्कृतिक प्रभाव है।
- **केरल** दक्षिण-पश्चिम भारत का एक तटीय राज्य है जो समुद्र और पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
  - यहाँ मसालों की खेती ने यहूदी, अरब और पुर्तगाली समुदायों सहित व्यापारियों को आकर्षित किया।
  - केरल अपनी धार्मिक विविधता के लिए जाना जाता है जिसमें **यहूदी, इस्लाम, ईसाई, हिंदू और बौद्ध** धर्म शामिल हैं। चावल, मछली और सब्जियां यहाँ मुख्य आहार हैं और मछली पकड़ने के जालों एवं बर्तनों में चीन का सांस्कृतिक प्रभाव देखा जा सकता है।

अपनी विषम भौगोलिक स्थिति के बावजूद दोनों क्षेत्रों ने समान सांस्कृतिक प्रभावों का अनुभव किया है। यह केरल का भूगोल था जिसने मसालों की खेती की अनुमति दी थी और लद्दाख एवं उसके ऊन की विशेष भौगोलिक स्थितियों ने व्यापारियों को इन क्षेत्रों में आकर्षित किया था। इस प्रकार इतिहास और भूगोल प्राय: एक साथ बंधे हुए हैं।

समकालीन आपसी व्यवहार

- **आधुनिक गतिशीलता:** वर्तमान जीवन शैली में काम के लिए लगातार स्थानांतरण करना पड़ता है जिससे सांस्कृतिक परंपराओं एवं जीवन के तरीकों को नए वातावरण में एकीकृत किया जा सकता है।
- **आस-पड़ोस की विविधता:** स्थानीय समुदायों के भीतर विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं, कहानियों, रीति-रिवाजों और परंपराओं को साझा करते हैं एवं पारस्परिक संबंधों व सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हैं।

विविधता में एकता

- भारत की विविधता सदैव शक्ति का स्रोत रही है।
- ब्रिटिश शासन के दौरान **विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में एकजुट** हुए। उन्होंने औपनिवेशिक सत्ता का विरोध करने के लिए अपने मतभेदों के बावजूद एक साथ काम किया।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड ने बहादुर प्रदर्शनकारियों के सम्मान में एक गीत को प्रेरित किया। स्वतंत्रता संग्राम के गीत और प्रतीक हमें विविधता का सम्मान करने की भारत की परंपरा की याद दिलाते हैं।
- **रवींद्रनाथ टैगोर** द्वारा रचित भारत का राष्ट्रगान भारत की एकता की एक और अभिव्यक्ति है।
- भारतीय ध्वज, विरोध का प्रतीक बन गया।
- **जवाहरलाल नेहरू ने** देश का वर्णन करने के लिए **'विविधता में एकता'** वाक्यांश गढ़ा तथा सहिष्णुता की गहरी भावना और मान्यताओं व रीति-रिवाजों की स्वीकृति पर जोर दिया।

स्मरणीय बिंदु

- 'जन गण मन' का बंगाली से अंग्रेजी में अनुवाद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने फरवरी 1919 में चित्तूर जिले के मदनपल्ले में किया था।
- जलियांवाला बाग नरसंहार अमृतसर में हुआ था।
- केरल में ओणम त्योहार के दौरान नौका दौड़ के खेल आयोजित किए जाते हैं।
- पश्मीना शॉल लद्दाख में प्रसिद्ध है।

प्रश्न

1. लद्दाख क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये जिसके ऐतिहासिक और भौगोलिक कारक इसकी विविधता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं:

1. पश्मीना ऊन लद्दाख में बकरियों द्वारा उत्पादित किया जाता है और इसे अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है।

2. बौद्ध धर्म लद्दाख से होते हुए तिब्बत पहुंचा, जिसे छोटा तिब्बत भी कहा जाता है।

गैर-हस्तक्षेप की रणनीतिः

- सभी धर्मों की भावनाओं का सम्मान करने और धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप से बचने के लिए, सरकार कुछ धार्मिक समुदायों के लिए अपवाद बनाती है।
- कुछ धार्मिक प्रथाओं को तब तक अनुमति दी जा सकती है जब तक वे दूसरों के अधिकारों और कल्याण का उल्लंघन नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, सिखों को हेलमेट पहनने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि भारत सरकार मानती है कि पगड़ी उनकी धार्मिक प्रथाओं के लिए महत्वपूर्ण है।

हस्तक्षेप की रणनीति :

- राज्य सभी नागरिकों के अधिकारों और समानता को बनाए रखने के प्रयास में धार्मिक वर्चस्व या भेदभाव की घटनाओं में हस्तक्षेप करता है।
- अस्पृश्यता, हिंदू धर्म के भीतर एक सामाजिक कुप्रथा है जो कुछ निचली जातियों के साथ भेदभाव करती है और उन्हें अलग थलग करती है, इस कुप्रथा पर प्रतिबन्ध हस्तक्षेप का एक उदाहरण है।
- राज्य समान उत्तराधिकार अधिकारों और अन्य आवश्यक सुरक्षा उपायों की गारंटी के लिए समुदायों के व्यक्तिगत कानूनों में भी हस्तक्षेप कर सकता है।

समर्थन की रणनीतिः

- भारतीय संविधान धार्मिक समुदायों को समर्थन के अंतर्गत अपने स्वयं के संस्थान और कॉलेज स्थापित करने का अधिकार देता है।
- धार्मिक समुदायों को उनकी शैक्षिक पहलों का समर्थन करने के लिए गैर-प्राथमिकता के आधार पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

भारतीय धर्मनिरपेक्षता और संयुक्त राज्य अमेरिका की धर्मनिरपेक्षता के बीच तुलना

भारत	संयुक्त राज्य अमेरिका
भारत का कोई आधिकारिक धर्म नहीं है।	अमेरिकी संविधान का पहला संशोधन विधायिका को किसी भी धर्म को आधिकारिक धर्म घोषित करने से रोकता है।
संवैधानिक आदर्शों के आधार पर, आवश्यकता पड़ने पर धार्मिक मामलों में राज्य के हस्तक्षेप की अनुमति देता है।	धर्म और राज्य को सख्ती से अलग करता है धार्मिक मामलों में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
राज्य, धर्म से अलग तो है लेकिन धर्म से यह अलगाव सैद्धांतिक है।	न तो राज्य और न ही धर्म एक-दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप कर सकते हैं।
राज्य किसी धार्मिक समुदाय के भीतर सामाजिक मुद्दों या भेदभाव को संबोधित करने के लिए धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप कर सकता है (उदाहरण के लिए, अस्पृश्यता को समाप्त करना)।	धार्मिक प्रथाओं या मामलों में राज्य को हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देता है।
संविधान राज्य के धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के लिए मानक के रूप में कार्य करता है।	एक प्रमुख सिद्धांत के रूप में धार्मिक मामलों में राज्य की भागीदारी के अभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों की रक्षा के लिए भारतीय संविधान द्वारा मौलिक अधिकारों का प्रावधान किया गया है।	संवैधानिक प्रावधान धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं और आधिकारिक धर्म की स्थापना या किसी विशेष धर्म को प्राथमिकता देने पर प्रतिबंध लगाते हैं।

याद रखने योग्य बिन्दु

- संयुक्त राज्य अमेरिका में, सरकारी स्कूलों में अधिकांश बच्चों को अपने स्कूल के दिन की शुरुआत 'निष्ठा की शपथ' पढ़कर करनी होती है। हालाँकि, यह 60 साल से भी पहले तय कर दिया गया था कि सरकारी स्कूल के छात्र को शपथ दोहराने की आवश्यकता नहीं है यदि यह उसकी धार्मिक आस्था के साथ विरोधाभासी है।
- फरवरी 2004 में, फ्रांस ने एक कानून पारित किया जिसमें छात्रों को इस्लामिक बुरका, यहूदी टोपी या बड़े ईसाई क्रॉस जैसे किसी भी विशिष्ट धार्मिक या राजनीतिक चिह्न या प्रतीक पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

शब्द संकलन

जोर-जबरदस्ती- इसका अर्थ है किसी को कोई चीज करने के लिए मजबूर करना। इस अध्याय के संदर्भ में यह शब्द राज्य जैसी किसी कानूनी सत्ता द्वारा ताकत के इस्तेमाल से है।

एकीकृत न्यायिक प्रणाली: भारत में विभिन्न स्तरों की अदालतें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। भारत में न्यायिक प्रणाली एकीकृत है, जिसका अर्थ है कि उच्च न्यायालयों द्वारा लिए गए निर्णय निचली अदालतों पर बाध्यकारी होते हैं। **निचले स्तर से लेकर उच्चतम स्तर तक के न्यायालयों की संरचना ऐसी है कि यह एक पिरामिड के समान है।**

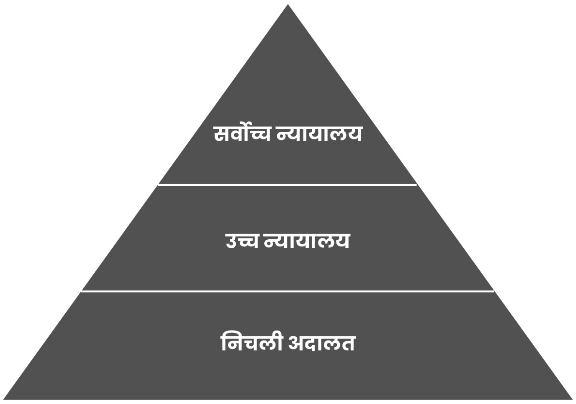

भारत की एकीकृत न्यायिक प्रणाली की पिरामिड संरचना

अपील की व्यवस्था

अपील की व्यवस्था यानि अपीलीय प्रणाली व्यक्तियों को उच्च न्यायालय में अपील करने की अनुमति देती है यदि उन्हें लगता है कि निचली अदालत का फैसला अन्यायपूर्ण है। आइए इसे एक केस स्टडी के जरिए समझते हैं।

केस स्टडी: राज्य (दिल्ली प्रशासन) बनाम लक्ष्मण कुमार और अन्य (1985)

- लक्ष्मण कुमार की पत्नी सुधा गोयल की दिसंबर 1980 में जलने के कारण एक अस्पताल में मृत्यु हो गई। सुधा के परिवार ने लक्ष्मण और उनके परिवार के सदस्यों पर उनकी हत्या का आरोप लगाते हुए ट्रायल कोर्ट में मामला दायर किया। प्रत्यक्षदर्शियों ने गवाही दी कि उन्होंने सुधा की चीख सुनी और उसे लक्ष्मण के फ्लैट में जलते हुए देखा। सुधा ने आरोप लगाया कि उसकी सास ने उस पर मिट्टी का तेल डाला था और लक्ष्मण ने आग लगायी थी।
- सुधा के परिवार और एक पड़ोसी ने कहा कि सुधा को उसके ससुराल वालों ने प्रताड़ित किया था।
- ट्रायल कोर्ट ने लक्ष्मण, उनकी मां शकुंतला और उनके बहनोई सुभाष चंद्र को दोषी ठहराया और उन्हें मौत की सजा सुनाई।
- नवंबर 1983 में, अभियुक्तों ने उच्च न्यायालय में अपील की, जिसने उन्हें बरी कर दिया, और निष्कर्ष निकाला कि सुधा की मृत्यु केरोसिन स्टोव के कारण लगी आकस्मिक आग के कारण हुई थी। महिला समूहों ने उच्च न्यायालय के फैसले का विरोध किया और भारतीय महिला वकीलों के संघ के माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय में एक अलग अपील दायर की। 1985 में सुप्रीम कोर्ट ने लक्ष्मण और उनके परिवार के सदस्यों को बरी करने के खिलाफ अपील पर सुनवाई की। दलीलों पर विचार करने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने लक्ष्मण और उसकी मां को दोषी पाया लेकिन अपर्याप्त सबूतों के कारण सुभाष को बरी कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने लक्ष्मण और उनकी मां को उम्रकैद की सजा सुनाई।

उपर्युक्त मामले में अपील की व्यवस्था

- यह व्यवस्था पार्टियों को निचली अदालतों के फैसलों को उच्च अदालतों में चुनौती देने की अनुमति देती है।
- इस मामले में, ट्रायल कोर्ट ने आरोपियों को दोषी ठहराया, लेकिन उन्होंने उच्च न्यायालय में अपील की, जिससे वे बरी हो गए।
- हाई कोर्ट के फैसले से असंतुष्ट महिला समूहों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की।
- सर्वोच्च न्यायालय ने, शीर्ष अदालत के रूप में, मामले की समीक्षा की और लक्ष्मण और उनकी मां की सजा को बरकरार रखते हुए एक अलग निर्णय दिया।
- अपीलीय प्रणाली उच्च न्यायालयों को निचली अदालतों द्वारा दिए गए निर्णयों पर पुनर्विचार करने और संशोधित करने का अवसर प्रदान करती है।

विधि व्यवस्था की विभिन्न शाखाएँ

भारत में कानूनी प्रणाली दो शाखाओं में विभाजित है: आपराधिक/फौजदारी कानून और नागरिक कानून।

फौजदारी कानून	दीवानी कानून
• यह ऐसे आचरण या कृत्यों से संबंधित है जिन्हें कानून अपराध के रूप में परिभाषित करता है। उदाहरण के लिए चोरी करना, किसी महिला को अधिक दहेज लाने के लिए परेशान करना, हत्या करना इत्यादि। • इसकी शुरुआत आमतौर पर पुलिस के पास प्रथम सूचना रिपोर्ट (FIR) दर्ज करने से होती है जो अपराध की जांच करती है जिसके बाद अदालत में मामला दायर किया जाता है। • दोषी पाए जाने पर आरोपी को जेल भेजा जा सकता है और जुर्माना भी लगाया जा सकता है।	• यह व्यक्तियों के अधिकारों को किसी भी तरह की हानि या क्षति से संबंधित है। उदाहरण के लिए, जमीन की बिक्री, सामान की खरीद, किराए के मामले, तलाक के मामले से संबंधित विवाद। • प्रभावित पक्ष को ही संबंधित अदालत के समक्ष याचिका दायर करनी होती है। किराये के मामले में मकान मालिक या किरायेदार कोई भी मामला दर्ज कर सकता है। • अदालत राहत की व्यवस्था करती है। उदाहरण के लिए, मकान मालिक और किरायेदार के बीच के मामले में, अदालत फ्लैट खाली करने और लंबित किराए का भुगतान करने का आदेश दे सकती है।

© StudyIQ Publications

आनुपातिक प्रतिनिधित्व

- **इजराइल एक आनुपातिक प्रतिनिधित्व (PR) प्रणाली का पालन करता है,** जो भारत में उपयोग की जाने वाली फर्स्ट पास्ट द पोस्ट (FPTP) प्रणाली से बहुत अलग है।
  - **इजराइल में मत की गणना के बाद सभी पार्टी को उसके मतों के अनुपात में** संसद में सीटों का हिस्सा आवंटित किया जाता है।
  - **प्रत्येक पार्टी** चुनाव से पहले घोषित की गई उम्मीदवारों की वरीयता सूची से **अपने कोटे की आवंटित संसद की सीटों को** भरती है। चुनाव की इस प्रणाली को **आनुपातिक प्रतिनिधित्व (PR) प्रणाली कहा जाता है।**
  - इस प्रणाली में किसी पार्टी को उसी अनुपात में सीटें मिलती हैं, जिस अनुपात में उसे मत मिलते हैं।
- **PR प्रणाली के दो रूप हैं:**
  - **इजराइल और नीदरलैंड** जैसे कुछ देशों में, पूरे देश को एक निर्वाचन क्षेत्र के रूप में माना जाता है, और पार्टियों को उनके राष्ट्रीय मत के हिस्से के आधार पर सीटें आवंटित की जाती हैं।
  - **अर्जेंटीना और पुर्तगाल** जैसे अन्य देशों में, देश को बहु-सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, और पार्टियां प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के लिए उम्मीदवारों की सूची तैयार करती हैं।
- **किसी पार्टी को प्राथमिकता :** PR प्रणाली में, मतदाता उम्मीदवार के बजाय **किसी पार्टी को प्राथमिकता देते हैं**
  - किसी निर्वाचन क्षेत्र में सीटें प्रत्येक पार्टी को प्राप्त वोटों के आधार पर वितरित की जाती हैं। परिणामस्वरूप, एक निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि विभिन्न दलों से संबंधित हो सकते हैं।
- **भारत में:** भारत अप्रत्यक्ष चुनावों जैसे कि के चुनाव के लिए सीमित पैमाने पर PR प्रणाली का उपयोग करता है
  - **अध्यक्ष**
  - **उपाध्यक्ष**
  - **राज्य सभा**
  - **विधान परिषद**
  - ये चुनाव संविधान द्वारा निर्धारित PR **प्रणाली के तीसरे और जटिल प्रणाली का पालन करते हैं।**

राज्यसभा चुनाव में PR कैसे काम करता है?

- राज्यसभा चुनावों के लिए PR का तीसरा संस्करण, **एकल हस्तांतरणीय वोट प्रणाली (एसटीवी) का पालन किया जाता है।**
- प्रत्येक राज्य में राज्यसभा में सीटों का एक विशिष्ट कोटा होता है।
- सदस्यों **का चुनाव संबंधित राज्य विधान सभाओं द्वारा किया जाता है।** उस राज्य में मतदाता ही विधायक होते हैं।
- प्रत्येक मतदाता को अपनी पसंद के अनुसार उम्मीदवारों को रैंक करना आवश्यक है।
- विजेता घोषित होने के लिए, उम्मीदवार को न्यूनतम वोट कोटा हासिल करना होगा, जो एक सूत्र द्वारा निर्धारित किया जाता है:

$$\left(\frac{\text{कुल डाले गए मत}}{\text{निर्वाचित होने वाले उम्मीदवारों की कुल संख्या} + 1}\right) + 1$$

चुनाव की FPTP और PR प्रणाली की तुलना

FPTP	PR
देश को छोटी-छोटी भौगोलिक इकाइयों में विभाजित किया गया है जिन्हें निर्वाचन क्षेत्र या जिले कहा जाता है।	बड़े भौगोलिक क्षेत्रों को निर्वाचन क्षेत्रों के रूप में सीमांकित किया जाता है। पूरा देश एक ही निर्वाचन क्षेत्र हो सकता है।
प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र एक प्रतिनिधि चुनता है।	एक निर्वाचन क्षेत्र से एक से अधिक प्रतिनिधि चुने जा सकते हैं
मतदाता किसी उम्मीदवार को वोट देता है	मतदाता पार्टी को वोट देता है
किसी पार्टी को विधायिका में वोटों से अधिक सीटें मिल सकती हैं।	प्रत्येक दल को प्राप्त मतों के प्रतिशत के अनुपात में विधायिका में सीटें मिलती हैं।
चुनाव जीतने वाले उम्मीदवार को बहुमत (50%+1) वोट नहीं मिल सकते हैं	चुनाव जीतने वाले उम्मीदवार को बहुमत मिलता है।
उदाहरण: यूके, भारत	**उदाहरण:** इजराइल, नीदरलैंड

भारत द्वारा FPTP प्रणाली अपनाने के पीछे कारण

- **सरलता:** FPTP प्रणाली आम मतदाताओं के लिए समझने में सीधी और आसान है, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जिन्हें राजनीति और चुनावों के बारे में विशेष जानकारी नहीं है।
- **मतदाताओं के लिए स्पष्ट विकल्प:** FPTP प्रणाली में, मतदाता **चुनाव के दौरान स्पष्ट विकल्प प्रदान करते हुए किसी विशिष्ट उम्मीदवार या पार्टी का समर्थन कर सकते हैं।**
- **निर्वाचन क्षेत्र-आधारित प्रतिनिधित्व:** FPTP मतदाताओं को अपने स्वयं के प्रतिनिधि को जानने की अनुमति देता है, जिससे उन्हें अपने कार्यों के लिए जवाबदेह बनाना आसान हो जाता है।
- **संसदीय प्रणाली में स्थिरता:** FPTP प्रणाली संसदीय प्रणाली में एक स्थिर सरकार के गठन की सुविधा प्रदान करती है, जहां कार्यपालिका को विधायिका में बहुमत की आवश्यकता होती है।

STUDY IQ PUBLICATIONS

NCERT सरलीकृत सीरीज़

- मूल अवधारणाओं पर विशेष फोकस
- सारगर्भित और स्पष्ट भाषा
- विषयवार वर्गीकरण
- नई एनसीईआरटी से अपडेटेड कंटेंट
- मूल्यांकन के लिए अभ्यास प्रश्न

इतिहास

सारांश नोट्स

कक्षा 6-12

यूपीएससी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

"NCERT सरलीकृत (NCERT Simplified)" पुस्तक श्रृंखला में आपका स्वागत है, यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की पाठ्यपुस्तकों का संक्षिप्त और स्पष्ट अवलोकन प्रदान करने के लिए डिजाइन की गयी एक व्यापक मार्गदर्शिका है। यह पुस्तक यूपीएससी, एसएससी और अन्य सभी सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई है। StudyIQ द्वारा प्रकाशित, इस पुस्तक का उद्देश्य अत्यधिक विस्तृत एनसीईआरटी पाठ्यक्रम को सरल बनाना और आपको अपनी परीक्षा में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान से समृद्ध करना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं के क्षेत्र में, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को विभिन्न विषयों की गहन समझ के लिए एक नींव के रूप में माना जाता है। इन पुस्तकों की सुस्पष्ट पाठ्य सामग्री और सटीकता पर शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा समान रूप से भरोसा किया जाता है। हालाँकि, इसके विस्तृत पाठ्यक्रम के कारण, अभ्यर्थियों के लिए पुस्तक में दिए हुए हर विवरण को कवर करना या पढ़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, "NCERT सरलीकृत" को आपकी तैयारी को कारगर बनाने और सफलता की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए एक आदर्श सहयोगी के रूप में तैयार किया गया है।

इस पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; शुरुआत में केन्द्रीय तथ्य सार एवं सिद्धांत तथा अंत में राज्य विशेष तथ्य सार एवं सिद्धांत। परीक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- **सारगर्भित सारांश:** हमने अनावश्यक विवरणों को समाप्त करते हुए मुख्य अवधारणाओं, परिकल्पनाओं और सिद्धांतों को समाहित किया है, ताकि आप आवश्यक ज्ञान में महारत हासिल करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- **विषय-वार प्रस्तुति:** पुस्तक को अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक विशिष्ट विषय के लिए समर्पित है, जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था, समाज इत्यादि।
- **सटीक और स्पष्ट भाषा शैली:** हमारा मानना है कि सीखने की प्रक्रिया में भाषा की सटीकता और स्पष्टता महत्वपूर्ण है। इसलिए, पुस्तक की भाषा को सरल एवं सहज रखा गया है, जिससे जटिल अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। यह लेखन शैली न केवल विषय की त्वरित समीक्षा में सहायता करती है, बल्कि जानकारी के बेहतर उपयोग करने की सुविधा भी प्रदान करती है।
- **अभ्यास प्रश्न:** सारांश के साथ ही, "NCERT सरलीकृत" में आपकी समझ का आकलन करने और आपके सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए सोच-समझकर तैयार किये गये अभ्यास प्रश्न शामिल हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आपकी सफलता की यात्रा में, "एनसीईआरटी सरलीकृत" आपका विश्वसनीय सहयोगी होने का वादा करता है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक आपको अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक ज्ञान, आत्मविश्वास और कौशल के साथ सशक्त बनाएगी।

शुभकामनाओं सहित

टीम Study IQ

विषय सूची

कक्षा - 6: हमारे अतीत I

1. परिचय: क्या, कहाँ, कैसे और कब? ... 2
2. आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक ... 4
3. आरंभिक नगर ... 8
4. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें ... 12
5. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य ... 15
6. नए प्रश्न और विचार ... 18
7. राज्य से साम्राज्य ... 22
8. गांव, शहर और व्यापार ... 25
9. नए साम्राज्य और राज्य ... 28
10. इमारतें, चित्र तथा किताबें ... 32

कक्षा - 7: हमारे अतीत II

1. हजार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों का अनुरेखण ... 37
2. शासक और राज्य ... 42
3. दिल्ली: 12वीं से 15वीं शताब्दी ... 47
4. मुगल (16वीं से 17वीं शताब्दी) ... 51
5. जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय ... 54
6. ईश्वर से अनुराग ... 58
7. क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण ... 64
8. अठारहवीं सदी की राजनीतिक संरचनाएँ ... 68

कक्षा - 8: हमारे अतीत III

1. परिचय: कैसे, कब और कहाँ ... 75
2. व्यापार से राज्य तक: कंपनी द्वारा सत्ता की स्थापना ... 77
3. ग्रामीण क्षेत्रों पर शासन ... 82
4. आदिवासी, दीकु और स्वर्ण युग की परिकल्पना ... 86
5. 1857 और उसके बाद के जन विद्रोह ... 90
6. 'देशी जनता' को सभ्य बनाना एवं राष्ट्र को शिक्षित करना ... 93

7. महिला, जाति एवं सुधार 96

8. राष्ट्रीय आंदोलन का विकासः 1870-1947 101

कक्षा - 9: समकालीन भारत ।

1. फ्रांसीसी क्रांति 110

2. यूरोप में समाजवाद और रूसी क्रांति 118

3. नाजीवाद और हिटलर का उदय 128

4. वन्य समाज और उपनिवेशवाद 137

5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 144

कक्षा - 10: समकालीन भारत ॥

1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय 152

2. भारत में राष्ट्रवाद 163

3. एक वैश्विक दुनिया का निर्माण 173

4. औद्योगीकरण का युग 184

5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया 191

कक्षा - 11: विश्व इतिहास के कुछ विषय

1. प्रारंभिक समाज 200

2. तीन महाद्वीपों में विस्तृत साम्राज्य 206

3. यायावर/खानाबदोश साम्राज्य (छवउंकपब म्उचपतमे) 212

4. तीन वर्ग (जेम जेतमम व्तकमते) 218

5. बदलती सांस्कृतिक परंपराएँ 225

6. मूल निवासियों को विस्थापित करना 231

7. आधुनिकीकरण के मार्ग 237

कक्षा - 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- ।

1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँः हड़प्पा सभ्यता 251

2. राजा, किसान और नगर 257

3. बंधुत्व, जाति तथा वर्ग 263

4. विचारक, विश्वास और इमारतें 269

कक्षा - 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- ॥

5. यात्रियों के नजरिये 277

6. भक्ति-सूफी परंपराएं 282

7. एक साम्राज्य की राजधानी: विजयनगर 292

8. किसान, जमींदार और राज्य 298

कक्षा - 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- III

9. उपनिवेशवाद और देहात (ग्रामीण क्षेत्र) 305

10. विद्रोही और ब्रिटिश राज 311

11. महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन 318

12. संविधान का निर्माण 325

प्रतिदर्श पेज

2

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

आरंभिक लोग: वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?

- **आखेटक-खाद्य संग्राहक:** बीस लाख साल पहले उपमहाद्वीप में रहने वाले आरंभिक लोगों को आखेटक-खाद्य संग्राहक के रूप में वर्णित किया जाता है।
  - यह नाम उस गतिविधि से आता है जिस तरीके से वे अपना भोजन प्राप्त करते थे, आम तौर पर जानवरों का शिकार करके, वन उपज इकट्ठा करके और मछली या पक्षियों को पकड़कर।
- **एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन:** आखेटक-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते थे क्योंकि:
  - अगर वे लंबे समय तक एक ही स्थान पर ठहरते, तो वे सभी उपलब्ध पौधों और पशु संसाधनों को खा जाते।
  - जानवर लगातार घूमते रहते हैं, चाहे वह छोटे शिकार की खोज में हो या हिरण और जंगली मवेशियों के मामले में घास एवं पत्तियों की तलाश में। इस वजह से इनका शिकार करने वालों को इनकी प्रत्येक हरकत के प्रति सतर्क रहना पड़ता था।
  - पौधे और पेड़ अलग-अलग मौसमों में फल देते हैं। इसलिए, लोग विभिन्न प्रकार के पौधों की तलाश में मौसम-दर-मौसम में घूमते रहे होंगे।
  - कई नदियाँ और झीलें बारहमासी हैं (जिनमें पूरे वर्ष पानी रहता है), अन्य मौसमी हैं। इनके किनारे रहने वाले लोगों को शुष्क मौसम में पानी की तलाश में जाना पड़ता होगा।

हम इन लोगों के बारे में कैसे जानते हैं?

- **उपकरण और उनके उपयोग:** पुरातत्वविदों ने पाया है कि लोगों ने पत्थर, लकड़ी एवं हड्डी के उपकरण बनाए और उनका उपयोग किया, जिनमें से पत्थर के उपकरण सबसे अच्छे स्वरूप में बचे हैं।
  - इनमें से कुछ पत्थर के औजारों का उपयोग **मांस और हड्डी को काटने, छाल** (पेड़ों से) और **खाल** (जानवरों की खाल) निकालने, **फल व जड़ों को काटने के** लिए किया जाता था।
  - शिकार के लिए भाले और तीर बनाने के लिए कुछ को **हड्डी या लकड़ी के हैंडल से** जोड़ा गया होगा।
  - लकड़ी काटने के लिए अन्य उपकरणों का उपयोग किया जाता था, जिसे **जलाऊ लकड़ी** के रूप में उपयोग किया जाता था। लकड़ी का उपयोग झोपड़ियाँ और औजार बनाने में भी किया जाता था।
  - पत्थर के औजारों का उपयोग खाने योग्य जड़ों को इकट्ठा करने के लिए जमीन खोदने और जानवरों की त्वचा से बने कपड़े सिलने के लिए भी किया गया होगा।

रहने के लिए एक जगह का चुनाव

- **पुरास्थल:** पुरास्थल वे स्थान हैं जहां **वस्तुओं** (उपकरण, बर्तन, भवन आदि) **के अवशेष** पाए गए। इन्हें लोगों द्वारा बनाया गया, इस्तेमाल किया गया और फिर **छोड़ दिया गया।**
  - ये पृथ्वी की सतह पर, जमीन के नीचे दबे हुए या कभी-कभी पानी के नीचे भी पाए जा सकते हैं।
  - आखेटक-खाद्य संग्राहक मुख्य रूप से पानी के स्रोतों, जैसे **नदियों और झीलों** के पास रहते थे।
    - **उदाहरण: भीमबैठका** (वर्तमान मध्य प्रदेश में)। यह गुफाओं और शैलाश्रयों वाला एक पुराना स्थल है। लोगों ने इन प्राकृतिक गुफाओं को इसलिए चुना क्योंकि वे बारिश,

- **विशिष्टताएँ:** 700 ईसवी तक, कई क्षेत्रों में अलग-अलग **भौगोलिक** आयाम एवं उनकी अपनी **भाषा** व **सांस्कृतिक** विशेषताएँ सम्मिलित थीं।
  - ये अलग-अलग शासक राजवंशों से भी जुड़े थे।
  - इन राज्यों के मध्य काफी संघर्ष था।
- **विस्तृत साम्राज्य:** चोल, खिलजी, तुगलक एवं मुगलों जैसे राजवंशों ने अखिल अथवा सम्पूर्ण-क्षेत्रीय साम्राज्य (Pan-India empire) का निर्माण किया जो विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ था लेकिन ये साम्राज्य समान रूप से सफल नहीं थे।
- **क्षेत्रीय राज्यों का उद्‌भव:** जब 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का पतन हुआ, तो इससे क्षेत्रीय राज्यों का पुन: उदय हुआ।
  - वर्षों तक विस्तृत -क्षेत्र पर शासन ने क्षेत्रों के चरित्र में बदलाव किया।
  - सम्पूर्ण उपमहाद्वीप में, इन क्षेत्रों को बड़े व छोटे राज्यों की विरासत के साथ छोड़ दिया गया था जिनके द्वारा उन पर शासन किया था।
  - ये विरासत शासन, अर्थव्यवस्था के प्रबंधन, शाही-संस्कृतियों और भाषा जैसी कई विशिष्ट व साझा परंपराओं के उद्‌भव में स्पष्ट थीं।
  - 700 और 1750 ईसवीके दौरान, विभिन्न क्षेत्रों ने अपनी विशिष्टता खोए बिना एकीकरण की बड़ी ताकतों के प्रभाव को देखा।
- **भाषा:** कवि अमीर खुसरो के अनुसार, उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाएँ/बोलियाँ मौजूद थीं जैसे अवधी (उत्तर प्रदेश), लाहौरी, कश्मीरी, गुजरी (गुजरात), माश्बारी (तमिलनाडु), इत्यादि।
  - उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि संस्कृत किसी भी क्षेत्र से संबंधित नहीं थी। यह एक प्राचीन भाषा थी और "सामान्य लोग इसे प्रयोग में नहीं लाते, केवल ब्राह्मण इसका प्रयोग करते हैं"।

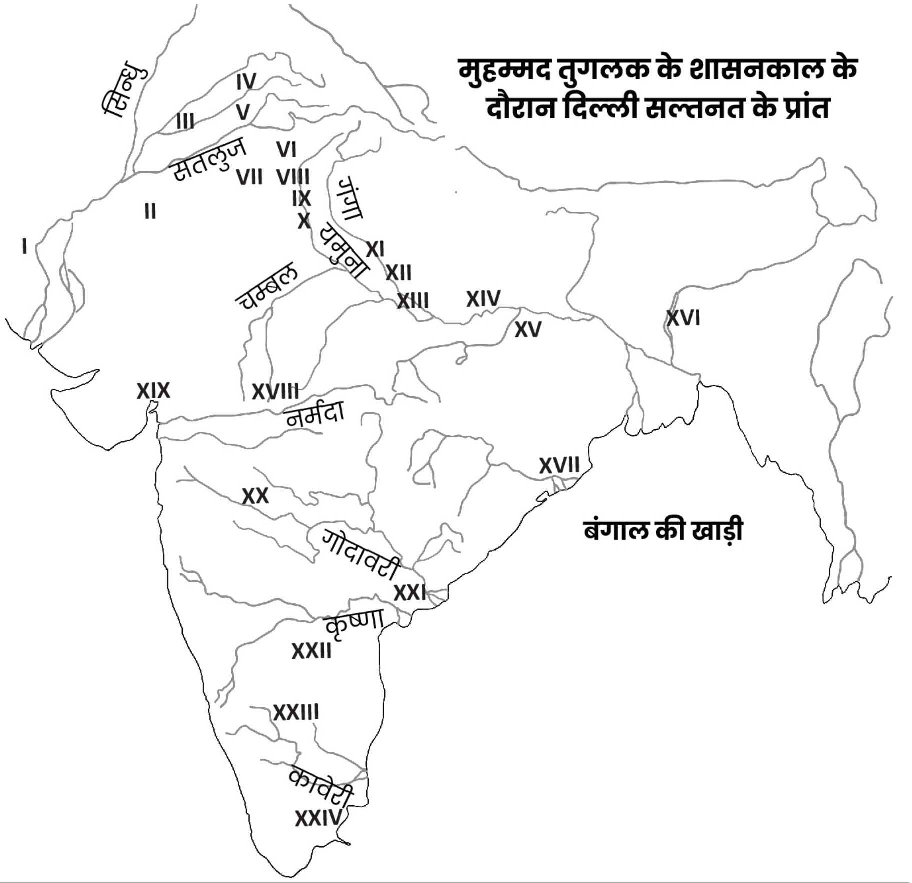

I	सिविस्तान	VII	सरसुती	XIII	कड़ा	XIX	गुजरात
II	उच्छ	VIII	कुहराम	XIV	अवध	XX	देवगिरी
III	मुल्तान	IX	हाँसी	XV	बिहार	XXI	तेलंगाना
IV	कलानौर	X	दिल्ली	XVI	लखनौती	XXII	तैलंग
V	लाहौर	XI	बदायूँ	XVII	जाजनगर	XXIII	द्वारसमुद्र
VI	समाना	XII	कन्नौज	XVIII	मालवा	XXIV	माबार

मिस्र के शिहाबुद्दीन उमरी के मसालिक अल-अबसार फि ममालिक अल-अमसर के अनुसार मुहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत के प्रांत।

© StudyIQ Publications

करों के प्रकार: करों के तीन प्रकार थे:

- खराज नामक कर खेती पर आरोपित किया जाता था और किसान की उपज का लगभग 50% राशि,
- मवेशियों पर और
- घरों पर।

प्रांतों पर नियंत्रण की कमी: उपमहाद्वीप का बड़ा हिस्सा दिल्ली सुल्तानों के नियंत्रण से बाहर रहा।

- दिल्ली से बंगाल जैसे दूर के प्रांतों को नियंत्रित करना मुश्किल था और दक्षिणी भारत पर आधिपत्य करने के बाद, पूरा क्षेत्र जल्द ही फर से स्वतंत्र हो गया।
- गंगा के मैदान में, ऐसे वन क्षेत्र थे जिन्हें सल्तनत सेनाएँ नहीं भेद सकती थीं, जबकि स्थानीय सरदारों ने इन क्षेत्रों में अपना शासन स्थापित कर लिया था।
- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक जैसे शासक अल्प समय के लिए ही इन क्षेत्रों में अपना नियंत्रण स्थापित कर सके।

चंगेज खान द्वारा आक्रमण: चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों ने 1219 ई में उत्तर-पूर्व ईरान में **ट्रांस-ओक्सियाना** पर आक्रमण किया तथा दिल्ली सल्तनत को गंभीर संकट का सामना करना पड़ा।

- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के शासन के दौरान दिल्ली सल्तनत पर मंगोल हमले बढ़ गए।
- परिणामत: दोनों शासकों को दिल्ली में एक बड़ी सेना जुटानी पड़ी, जिसने एक बड़ी प्रशासनिक चुनौती प्रस्तुत की।

पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में सल्तनत

- **सैयद और लोदी:** तुगलक शासकों के पश्चात, सैय्यद और लोदी राजवंशों ने **1526 ई** तक दिल्ली एवं आगरा को राजधानी बनाकर शासन किया।
- **स्वतंत्र शासक:** 16वीं शताब्दी तक, **जौनपुर, बंगाल, मालवा, गुजरात, राजस्थान** और सम्पूर्ण **दक्षिण भारत** में स्वतंत्र शासक थे; जिन्होंने समृद्ध राज्यों और राजधानियों की स्थापना की।
- **नए शासक समूह:** यह वह अवधि भी थी जिसमें **अफगानों और राजपूतों जैसे नए शासक समूहों का उद्भव** हुआ।
- **शेरशाह सूरी (1540-1545):** इन्होंने बिहार में अपने चाचा के अधीन एक छोटे से क्षेत्र के प्रबंधक के रूप में अपना सफर शुरू किया।
  - मुगल शासक हुमायूं (1530-1540, 1555-1556) **को चुनौती दी और** पराजित किया।
  - शेरशाह ने दिल्ली पर आधिपत्य प्राप्त किया।
  - सूर वंश द्वारा 1540 से 1555 ई तक मात्र **15 वर्षों तक शासन किया** गया।
  - सूर राजवंश ने एक ऐसे प्रशासन की शुरुआत की जिसने अलाउद्दीन खिलजी से तत्वों को ग्रहण किया एवं उन्हें अधिक प्रभावी बनाया।
  - शेरशाह की प्रशासन प्रणाली महान सम्राट अकबर (1556-1605) द्वारा अनुसरण की गई।

प्रश्न

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दिल्ली सल्तनतकाल के दौरान, पहली बार किसी राज्य की राजधानी बनी।

2. फारसी दिल्ली सुल्तानों के शासनकाल में प्रशासन की भाषा थी।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: (b)

प्र. तुगलक प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मुक्ती इक्ता भूमि में कानून और व्यवस्था के संचालन हेतु उत्तरदायी थे।

2. मुक्ती स्वयं अपने निर्दिष्ट क्षेत्र से संग्रहीत किए जाने वाले करों की राशि को तय कर सकते थे।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: (a)

© StudyIQ Publications

- **निश्चित वेतन:** अधिकांश श्रमिक उन कारखानों में मजदूर के रूप में कार्यरत थे जिनके मालिक उनका वेतन निर्धारित करते थे। हालाँकि, मजदूरी मूल्य महंगाई में वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ रही थी।
- **असमानता में वृद्धि:** परिणामस्वरूप, अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी हो गई। जब सूखे या ओलावृष्टि के कारण पैदावार कम हो गई, तो हालात बदतर हो गए।
- **निर्वाह संकट:** बढ़ती जनसंख्या, खाद्यान्न की कमी, निश्चित मजदूरी और अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता के कारण प्राचीन राजतंत्र के दौरान फ्रांस में यह आम बात थी।
  - परिभाषा: एक चरम स्थिति जहाँ आजीविका के बुनियादी साधन खतरे में पड़ जाते हैं ऐसी स्थिति को निर्वाह संकट के रूप में जाना जाता है।

उभरते मध्यवर्ग

- **बुर्जुआ वर्ग का उदय:** अठारहवीं सदी में मध्यम वर्ग के नाम से जाने जाने वाले सामाजिक समूहों का उदय हुआ।
- **संपत्ति अर्जन:** उन्होंने विदेशी व्यापार के विस्तार और ऊनी और रेशमी वस्त्रों जैसे सामानों के उत्पादन के माध्यम से संपत्ति अर्जित की, जिन्हें या तो विद्वानों के अमीर सदस्यों द्वारा निर्यात या खरीदा जाता था: तीसरे एस्टेट में वकील और सरकारी अधिकारी जैसे पेशेवर शामिल थे।
- **विचारधारा:** ये सभी लोग शिक्षित थे और उनका मानना था कि समाज में किसी भी समूह को जन्म से ही विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। बल्कि किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसकी योग्यता से निर्धारित होनी चाहिए।

दार्शनिकों का उदय

- **जॉन लॉक और ज्याँ जाक रूसो:** स्वतंत्रता, समान नियमों तथा समान अवसरों के विचार पर आधारित समाज की परिकल्पना की
- **टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट:** लॉक ने राजा के दैवीय और निरंकुश अधिकार के सिद्धांत का खंडन करने का प्रयास किया।
- **सामाजिक अनुबंध:** रूसो ने इस अवधारणा का विस्तार किया, लोगों और उनके प्रतिनिधियों के बीच एक सामाजिक अनुबंध के आधार पर सरकार का एक रूप प्रस्तावित किया।
- **द स्पिरिट ऑफ द लॉज:** मोंटेस्क्यू ने सरकारी शक्ति को विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शाखाओं के बीच विभाजित करने का प्रस्ताव रखा।
- **शक्ति पृथक्करण का उदाहरण:** सरकार का यह स्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका में तेरह उपनिवेशों द्वारा ब्रिटेन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा के बाद लागू किया गया था।
  - व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी के साथ अमेरिकी संविधान ने फ्रांसीसी राजनीतिक विचारकों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कार्य किया।

क्रांति की शुरुआत

- **कराधान:** प्राचीन राजतंत्र के फ्रांस में,राजा को केवल अपने विवेक से कर लगाने का अधिकार नहीं था।
  - सम्राट को एस्टेट जनरल की एक बैठक बुला कर नए करों के प्रस्तावों की मंजूरी लेनी पड़ती थी।
  - एस्टेट्स जनरल एक राजनीतिक निकाय था जिसमें तीनों एस्टेट्स ने अपने प्रतिनिधि भेजते थे।
  - पर 5 मई 1789,लुई XVI ने नए करों के प्रस्तावों को पारित करने के लिए एस्टेट जनरल की एक सभा बुलाई।
- **एस्टेट जनरल में मतदान:** अतीत में, एस्टेट जनरल में मतदान इस आधार पर किया जाता था कि प्रत्येक एस्टेट में एक वोट होता था। इस बार भी लुई सोलहवें इस प्रथा को जारी रखने पर अड़े रहे।
- **तीसरे एस्टेट की माँग:** हालांकि, तीसरे एस्टेट के सदस्यों ने माँग की कि मतदान सभा द्वारा कराया जाए, जिसमें प्रत्येक सदस्य के पास एक वोट हो।
- राजा ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और तीसरे एस्टेट के सदस्यों ने सभा से बहिर्गमन कर इसका विरोध किया।

तिथि	टिप्पणियाँ
1774	लुई XVI फ्रांस का राजा बन गया और सरकारी खजाना खाली हो चुका है और प्राचीन राजतंत्र के समाज में असंतोष गहराता जा रहा है।
1789	एस्टेट्स जनरल का आह्वान, थर्ड एस्टेट ने नेशनल असेंबली का गठन किया, बास्तील पर हमला किया गया, और ग्रामीण इलाकों में किसान विद्रोह हुए।
1791	राजा की शक्तियों को सीमित करने और सभी मनुष्यों को बुनियादी अधिकारों की गारंटी देने के लिए संविधान बनाया गया।
1792-93	फ्रांस एक गणतंत्र बनता है; राजा का सिर काट दिया जाता है। जैकोबिन गणराज्य का तख्तापलट और फ्रांस पर एक निर्देशिका का शासन।
1804	नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बनता है, यूरोप के विशाल भूभाग पर कब्जा कर लेता है।
1815	वाटरलू में नेपोलियन की हार।

नेशनल असेंबली का गठन

- **20 जून 1789:** तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों ने खुद को पूरे फ्रांसीसी राष्ट्र की आवाज के रूप में देखा।
  - वे वर्साय के मैदान पर एक इनडोर टेनिस कोर्ट के हॉल में मिले।
- **नेशनल असेंबली:** उन्होंने स्वयं को एक नेशनल असेंबली घोषित किया और शपथ ली कि जब तक सम्राट की शक्तियों को कम

STUDY IQ
PUBLICATIONS

NCERT सरलीकृत सीरीज़

- मूल अवधारणाओं पर विशेष फोकस
- सारगर्भित और स्पष्ट भाषा
- विषयवार वर्गीकरण
- नई एनसीईआरटी से अपडेटेड कंटेंट
- मूल्यांकन के लिए अभ्यास प्रश्न

अर्थव्यवस्था

सारांश नोट्स

कक्षा 9-12

यूपीएससी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

"NCERT सरलीकृत (NCERT Simplified)" पुस्तक श्रृंखला में आपका स्वागत है, यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की पाठ्यपुस्तकों का संक्षिप्त और स्पष्ट अवलोकन प्रदान करने के लिए डिजाइन की गयी एक व्यापक मार्गदर्शिका है। यह पुस्तक यूपीएससी, एसएससी और अन्य सभी सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई है। StudyIQ द्वारा प्रकाशित, इस पुस्तक का उद्देश्य अत्यधिक विस्तृत एनसीईआरटी पाठ्यक्रम को सरल बनाना और आपको अपनी परीक्षा में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान से समृद्ध करना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं के क्षेत्र में, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को विभिन्न विषयों की गहन समझ के लिए एक नींव के रूप में माना जाता है। इन पुस्तकों की सुस्पष्ट पाठ्य सामग्री और सटीकता पर शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा समान रूप से भरोसा किया जाता है। हालाँकि, इसके विस्तृत पाठ्यक्रम के कारण, अभ्यर्थियों के लिए पुस्तक में दिए हुए हर विवरण को कवर करना या पढ़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, "NCERT सरलीकृत" को आपकी तैयारी को कारगर बनाने और सफलता की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए एक आदर्श सहयोगी के रूप में तैयार किया गया है।

इस पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; शुरुआत में केन्द्रीय तथ्य सार एवं सिद्धांत तथा अंत में राज्य विशेष तथ्य सार एवं सिद्धांत। परीक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- **सारगर्भित सारांश:** हमने अनावश्यक विवरणों को समाप्त करते हुए मुख्य अवधारणाओं, परिकल्पनाओं और सिद्धांतों को समाहित किया है, ताकि आप आवश्यक ज्ञान में महारत हासिल करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- **विषय-वार प्रस्तुति:** पुस्तक को अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक विशिष्ट विषय के लिए समर्पित है, जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था, समाज इत्यादि।
- **सटीक और स्पष्ट भाषा शैली:** हमारा मानना है कि सीखने की प्रक्रिया में भाषा की सटीकता और स्पष्टता महत्वपूर्ण है। इसलिए, पुस्तक की भाषा को सरल एवं सहज रखा गया है, जिससे जटिल अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। यह लेखन शैली न केवल विषय की त्वरित समीक्षा में सहायता करती है, बल्कि जानकारी के बेहतर उपयोग करने की सुविधा भी प्रदान करती है।
- **अभ्यास प्रश्न:** सारांश के साथ ही, "NCERT सरलीकृत" में आपकी समझ का आकलन करने और आपके सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए सोच-समझकर तैयार किये गये अभ्यास प्रश्न शामिल हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आपकी सफलता की यात्रा में, "एनसीईआरटी सरलीकृत" आपका विश्वसनीय सहयोगी होने का वादा करता है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक आपको अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक ज्ञान, आत्मविश्वास और कौशल के साथ सशक्त बनाएगी।

शुभकामनाओं सहित

टीम Study IQ

विषय सूची

कक्षा – 9: अर्थशास्त्र

1. पालमपुर गाँव की कहानी 2

2. संसाधन के रूप में लोग/जन 7

3. निर्धनता: एक चुनौती 13

4. भारत में खाद्य सुरक्षा 19

कक्षा – 10: आर्थिक विकास की समझ

5. विकास 27

6. भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक 31

7. मुद्रा और साख 39

8. वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था 44

9. उपभोक्ता अधिकार 49

कक्षा – 11: भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

10. स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था 54

11. भारतीय अर्थव्यवस्था 1950–1990 60

12. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण: एक मूल्यांकन 68

13. भारत में मानव पूंजी निर्माण 75

14. ग्रामीण विकास 81

15. रोजगार संवृद्धि, अनौपचारीकरण एवं अन्य मुद्दे 89

16. पर्यावरण और सतत विकास 96

17. भारत और इसके पड़ोसी देशों के तुलनात्मक विकास का अनुभव 102

कक्षा – 12 (भाग I): समष्टि अर्थशास्त्र

18. परिचय 109

19. राष्ट्रीय आय लेखांकन 113

20. मुद्रा और बैंकिंग 119

21. आय और रोजगार का निर्धारण 126

22. सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था 130

23. खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र 137

कक्षा - 12 (भाग II): व्यष्टि अर्थशास्त्र

24. परिचय 144

25. उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत 148

26. उत्पादन तथा लागत 153

27. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत 157

28. बाजार संतुलन 160

प्रतिदर्श पेज

भारत में कृषि योग्य भूमि लाख हेक्टेयर में									
वर्ष (P) & Provisional Data									
1950–51	1990–91	2000–01	2010–11 (P)	2011–12 (P)	2012–13 (P)	2013–14 (P)	2014–15 (P)	2015–16 (P)	2016–17 (P)
कृषि योग्य क्षेत्र (लाख हेक्टेयर में)									
132	186	186	198	196	194	201	198	197	200

कृषि भूमि की उत्पादन क्षमता कैसे बढ़ाएं?

- बहु–फसलीकरण।
- अधिक उपज के लिए आधुनिक कृषि पद्धतियों का प्रयोग कर। उपज को एक ही मौसम के दौरान भूमि के किसी दिए गए भूभाग पर पैदा की गई फसल के रूप में मापा जाता है।

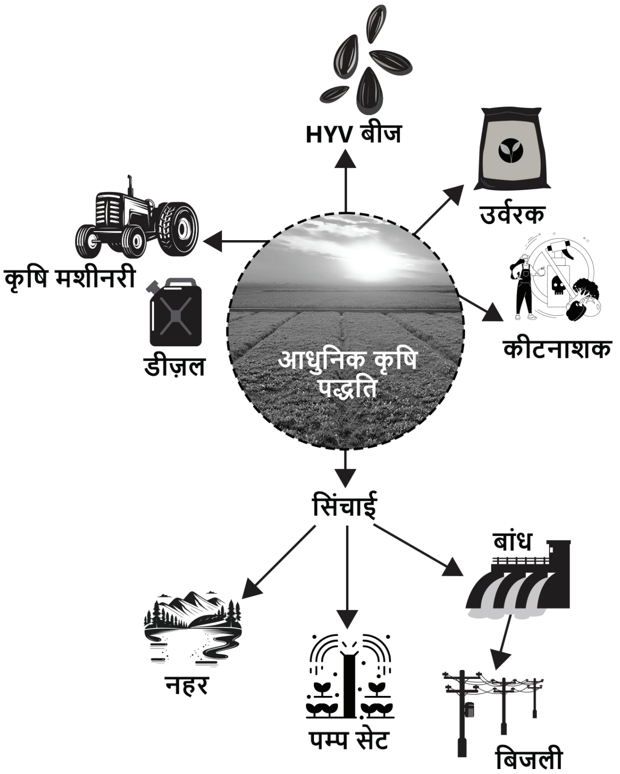

हरित क्रांति

- हरित क्रांति के अंतर्गत गेहूं और चावल की खेती के लिए बीजों की उच्च्च उपज देने वाली संकर किस्मों (HYVs) के उपयोग की शुरुआत हुई।
- HYV बीजों ने पारंपरिक बीजों की तुलना में अनाज उत्पादन में वृद्धि दर्ज किया।
- सर्वोत्तम परिणामों/उपज के लिए HYV बीजों को पर्याप्त पानी, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता होती है।
- पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश आधुनिक खेती के तरीकों को अपनाने वाले भारत के पहले राज्य क्षेत्र थे।
- इन क्षेत्रों में किसानों ने ट्यूबवेलों और नलकूपों के माध्यम से अत्यधिक सिंचाई की और HYV बीज, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकों का उपयोग किया।

- भारत में **2011-12 के लिए निर्धनता रेखा** ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 816 रुपये प्रति माह और शहरी क्षेत्रों के लिए 1000 रुपये निर्धारित की गई थी।
- निर्धनता रेखा का आकलन समय-समय पर (सामान्यत: हर पाँच वर्ष पर) प्रतिदर्श सर्वेक्षण के माध्यम से किया जाता है। यह सर्वेक्षण राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन अर्थात् नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन (NSSO) द्वारा कराए जाते हैं।
- विश्व बैंक जैसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठन निर्धनता रेखा के लिए एक समान मानक का प्रयोग करते हैं, जैसे $1.9 (2011,PPP) प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन के समतुल्य न्यूनतम उपलब्धता के आधार पर।

भारत में निर्धनता के अनुमान

- पिछले कुछ वर्षों में भारत में निर्धनता अनुपात **में काफी कमी आई है।**
- निर्धनता दर **1993-94 में 45% से घटकर 2004-05 में 37.2% हो गई।**
- 2011-12 में यह घटकर लगभग 22% हो गयी थी और प्रवृत्ति से पता चलता है कि यह भविष्य में 20% से नीचे गिर सकती है।
- निर्धन व्यक्तियों की संख्या भी 2004-05 में 407 मिलियन से घटकर 2011-12 में 270 मिलियन हो गई।
- इस अवधि के दौरान निर्धनता दर में **औसत वार्षिक गिरावट 2.2 प्रतिशत अंक थी।**

असुरक्षित समूह

- **असुरक्षित सामाजिक समूह:** भारत में असुरक्षित सामाजिक समूहों, जैसे कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले लोगों का अनुपात अधिक है।
- **असुरक्षित आर्थिक समूह:** आर्थिक समूहों में, **ग्रामीण कृषि** श्रमिक परिवार और **नगरीय अनियमित मजदूर** सबसे कमजोर हैं।

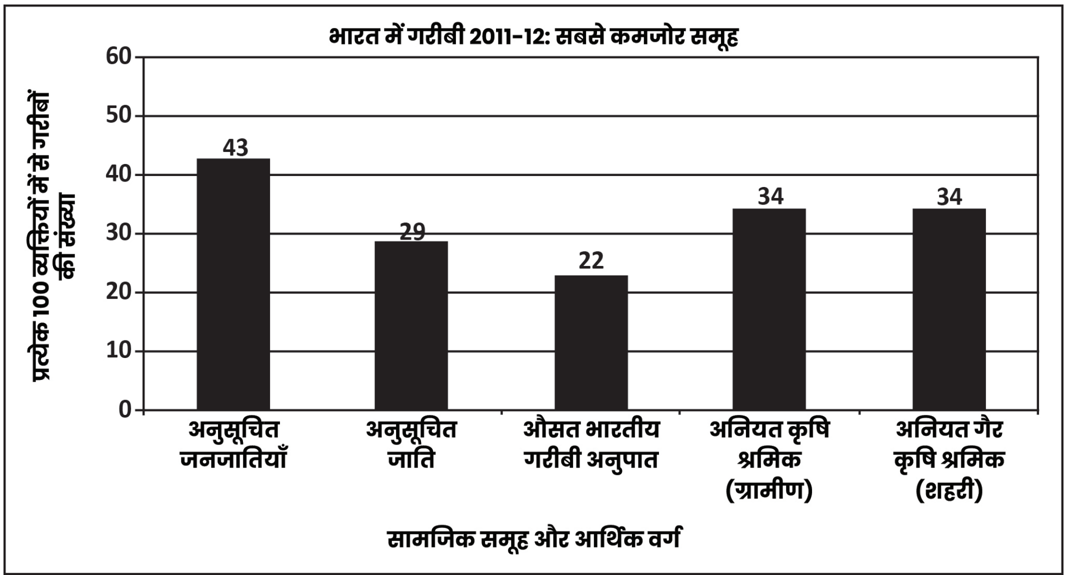

- **अनुसूचित जनजातियों** में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत (43%) सबसे अधिक है, इसके बाद नगरीय अनियमित मजदूर परिवार (34%) हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 34% अनियत मजदूर परिवार और 29% अनुसूचित जाति के परिवार भी गरीबी रेखा से नीचे आते हैं।
- सामाजिक रूप से वंचित समूहों में भूमिहीन अनियत दिहाड़ी श्रमिक होना उनकी दोहरी असुविधा की समस्या की गंभीरता को दिखाता है।

- अध्ययनों से पता चला है कि 1990 के दशक में अनुसूचित जनजाति **के परिवारों (अर्थात् अनुसूचित जातियों, ग्रामीण कृषि श्रमिकों और शहरी अनियमित मजदूर परिवारों)** को छोड़कर सभी समूहों में **निर्धनता में गिरावट** आई है।
- गरीब परिवारों के भीतर आय की असमानता मौजूद है, महिलाओं, बुजुर्गों और महिला शिशुओं को अक्सर संसाधनों तक पहुंच का सामना करना पड़ता है।

अंतर-राज्यीय असमानताएं

- भारत में निर्धनता का स्तर राज्यों में भिन्न होता है, निर्धनता कम करने मे सफलता की दर विभिन्न राज्यों मे अलग अलग है।
- मध्य प्रदेश, **असम, उत्तर प्रदेश, बिहार और ओडिशा** जैसे राज्यों में निर्धनता का स्तर राष्ट्रीय औसत से ज्यादा है।

© StudyIQ Publications

प्रश्न

1. **निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:**
   1. **भोजन की उपलब्धता**
   2. **भोजन की पहुंच**
   3. **भोजन प्राप्त करने का सामर्थ्य**

   इनमें से कितने खाद्य सुरक्षा के प्रमुख पहलू हैं?

   (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

2. **अमर्त्य सेन के अनुसार, खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में भोजन तक ''पहुंच'' में क्या शामिल है?**

   (a) बुनियादी खाद्य पदार्थों की उपलब्धता

   (b) पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक भौतिक और आर्थिक पहुंच

   (c) राज्य द्वारा प्रदान की गई खाद्य आपूर्ति के लिए पात्रता

   (d) खाद्य उत्पादन एवं बाजार विनिमय का संयोजन

उत्तर: (b)

3. **सूखे जैसी प्राकृतिक आपदा के दौरान खाद्य सुरक्षा का क्या होता है?**

   (a) खाद्यान्नों का कुल उत्पादन घटता है (b) खाद्य पदार्थों की कीमतें घटती हैं

   (c) (a) और (b) दोनों (d) न तो (a) और न ही (b)

उत्तर: (a)

4. **निम्नलिखित कथनों पर खाद्य असुरक्षित व्यक्तियों के संबंध में विचार कीजिए:**
   1. **भूमिहीन लोग उन जनसंख्या समूहों में से हैं जिन्हें खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ सकता है।**
   2. **केवल आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों को खाद्य असुरक्षा के प्रति संवेदनशील माना जाता है।**
   3. **महिलाओं में व्याप्त कुपोषण का एक उच्च स्तर खाद्य असुरक्षा का एक संकेतक है।**

   इनमें से कितने सही हैं?

   (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

5. **निम्नलिखित कथनों पर क्षेत्रीय उच्च खाद्य असुरक्षा से संबंधित विचार कीजिए:**
   1. **गरीबी की अधिकता वाले आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों में क्षेत्रीय उच्च खाद्य असुरक्षा की अधिक संभावना है।**
   2. **प्राकृतिक आपदाओं की आशंका वाले क्षेत्र क्षेत्रीय उच्च खाद्य असुरक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।**

   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

6. **दीर्घकालिक भूखमरी और मौसमी भूखमरी के बीच क्या अंतर है?**

   (a) दीर्घकालिक भूखमरी अपर्याप्त आहार के कारण होती है, जबकि मौसमी भूखमरी काम की उपलब्धता से संबंधित है।

   (b) शहरी क्षेत्रों में दीर्घकालिक भूखमरी होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मौसमी भूखमरी होती है।

   (c) दीर्घकालिक भूखमरी गरीबी का एक परिणाम है, जबकि मौसमी भूखमरी भोजन की उपलब्धता की कमी के कारण होती है।

   (d) दीर्घकालिक भूखमरी दीर्घकालिक होती है जबकि मौसमी भूखमरी अस्थायी होती है और विशिष्ट अवधियों से जुड़ी होती है।

उत्तर: (a)

- औद्योगिक क्षेत्र में द्वितीय स्तरीय सुधार इस चरण में बाद में शुरू किए गए।
  - सामान्य रूप से निजी क्षेत्र की फर्मों, साथ ही टाउनशिप और ग्रामीण उद्यमों, यानी, जो स्थानीय समूहों के स्वामित्व और संचालित हैं, को माल का उत्पादन करने की अनुमति दी गई थी।
- सरकारी स्वामित्व वाले उद्यम (SOEs), जिन्हें भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के रूप में भी जाना जाता है, को प्रतिस्पर्धा करने के लिए मजबूर किया गया था।
- दोहरी कीमत भी सुधार प्रक्रिया का एक हिस्सा थी। इसका मतलब है कि कीमतें दो तरीकों से तय की जाती थीं:
  - **सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य:** किसानों और औद्योगिक इकाइयों को सरकार द्वारा निर्धारित कीमतों पर निश्चित मात्रा में इनपुट और आउटपुट खरीदने एवं बेचने की आवश्यकता थी।
  - **बाजार मूल्य:** जबकि अन्य को बाजार मूल्यों पर खरीदा और बेचा जाता था।
- विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित किए गए।

पाकिस्तान

- पाकिस्तान ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र सह-अस्तित्व में हैं।
- 1950 और 1960 के दशक के अंत में, पाकिस्तान ने घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए टैरिफ संरक्षण और आयात नियंत्रण के साथ एक विनियमित नीति ढांचा लागू किया।
- हरित क्रांति की शुरूआत ने मशीनीकरण को बढ़ावा दिया, बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक निवेश बढ़ा, और खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई, कृषि संरचना में नाटकीय रूप से बदलाव आया।
- 1970 के दशक में, पूंजीगत वस्तुओं के उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया था, लेकिन 1970 और 1980 के दशक के अंत में, गैर-राष्ट्रीयकरण और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने की ओर एक बदलाव हुआ।
- पाकिस्तान को पश्चिमी देशों से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई और मध्य पूर्व (Middle-east) में प्रवासियों से प्रेषण(remittance) में वृद्धि देखी गई, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला।
- सरकार ने निजी क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रोत्साहन दिए, जिससे नए निवेश के लिए अनुकूल माहौल बना।

जनसांख्यिकीय संकेतक

- **चीन का जनसंख्या घनत्व:** क्षेत्रफल के मामले में सबसे बड़ा राष्ट्र होने के बावजूद, चीन में तीन देशों में सबसे कम जनसंख्या घनत्व है।
- **जनसंख्या वृद्धि:** पाकिस्तान में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि दर है, इसके बाद भारत और चीन आते हैं। **1970** के दशक के अंत में शुरू की गई चीन की एक-बच्चे की नीति (One-Child Policy) ने इसकी जनसंख्या वृद्धि को सीमित किया है।
- **लैंगिक अनुपात:** लैंगिक अनुपात सभी तीन देशों में महिलाओं के खिलाफ कम और पक्षपातपूर्ण है, विद्वानों ने समाज में प्रचलित पुत्र वरीयता को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया है।
- **स्थिति में सुधार के उपाय:** तीनों देश कम लैंगिक अनुपात को संबोधित करने और लैंगिक संतुलन में सुधार के लिए विभिन्न उपायों को लागू कर रहे हैं।
  - **एक-बच्चे की नीति के निहितार्थ:** चीन की एक-बच्चे की नीति के परिणामस्वरूप इसकी आबादी में उम्रदराज लोगों का अनुपात बढ़ा है। जिस वजह से देश ने अब जोड़ों को दो बच्चे पैदा करने की अनुमति दी है।
- **प्रजनन दर:** चीन में प्रजनन दर कम है, जबकि पाकिस्तान में बहुत अधिक प्रजनन दर है।
- **शहरीकरण:** चीन में शहरीकरण का स्तर उच्च है, जिसकी आबादी का एक महत्वपूर्ण अनुपात शहरी क्षेत्रों में रहता है। भारत में **34%** लोग शहरी क्षेत्रों में रहते हैं।

जनांकिकीय संकेतकों का चयन, 2017-18

	अनुमानित जनसंख्या (मिलियन में)	जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि	घनत्व (प्रति वर्ग किमी)	लैंगिक-अनुपात	प्रजनन दर	शहरीकरण
भारत	1352	1.03	455	924	2.2	34
चीन	1393	0.46	148	949	1.7	59
पाकिस्तान	212	2.05	275	943	3.6	37